ललिता की कहानी

फील्ड-स्तर का दृष्टिकोण

लेखक: सुदरू राम भारती, ब्लॉक अकादमिक समन्वयक (एल एल एफ), बस्तर, छत्तीसगढ़

ललिता (लुप्तेश्वरी भारती) प्राथमिक शाला बनियागाँव, ब्लॉक बकावंड, जिला बस्तर की कक्षा-2 में पढ़ती है। यह गाँव ब्लॉक मुख्यालय से लगभग 15 किलोमीटर दूर है। ललिता अपने माता-पिता और अपनी छोटी बहन के साथ गाँव में रहती है। उसके पिताजी किसानी का कार्य कर परिवार का भरण-पोषण करते हैं। ललिता अपने परिवार के साथ बहुत खुशी-खुशी रहती है। वह अपनी मर्जी से खेलती, आस-पास के गाँवों में अपने परिवार के साथ लोगों से मिलने जाती, अपने माता-पिता के काम में हाथ बंटाती और बहन की देखभाल करती। यह सब करना उसे बहुत अच्छा लगता था।

लेकिन स्कूल जाने पर उसे कई बंधन महसूस होते थे। दिन भर एक ही कक्षा में रहना, अपनी पसंद से बातें न कर पाना, अपनी पसंद के खेल न खेल पाना, ऊँची आवाज़ में शिक्षक की बातें सुनना, और शिक्षक की भाषा को न समझ पाना—ये सब बातें उसे परेशान करतीं। वह अनमनी सी स्कूल आती और किसी तरह समय पूरा होने का इंतज़ार करती। घर जाकर अपनी पसंद के काम करने के बारे में सोचती रहती। कई बार तो अलग-अलग बहाने बनाकर स्कूल नहीं आती थी।

ललिता के शिक्षक हरिराम उसके इस व्यवहार को देखकर कई बार उससे बात करने की कोशिश करते, लेकिन ललिता अधिकतर चुप ही रहती। कई बार वे नाराज़ भी हो जाते, जिससे ललिता डर जाती। इससे वह और अधिक चुप रहने लगी थी। शिक्षक भी समझ नहीं पा रहे थे कि वे क्या करें।

इसी बीच शिक्षक हरिराम को बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम से जुड़े छह दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लेने का अवसर मिला। प्रशिक्षण के दौरान कक्षा में बच्चों की भाषा के उपयोग से काम करने के अलग-अलग तरीकों पर विस्तार से बातचीत की गई। उन्हें बच्चों की भाषा में बनी अनेक सहायक शिक्षण सामग्री भी उपलब्ध कराई गई। इनमें बच्चों के संदर्भों से जुड़े चित्र, उनकी भाषा की कविताएँ, बड़ी किताबें और अभ्यास पुस्तिकाएँ आदि शामिल थीं। प्रशिक्षण की बातों और बच्चों की भाषा की सामग्री देखकर हरिराम जी बहुत प्रभावित हुए। चूँकि वे बच्चों की भाषा से पहले से ही परिचित थे, इसलिए उन्होंने इन तरीकों को कक्षा में प्रयोग करना शुरू कर दिया।

अब सुबह कक्षा की शुरुआत वे हाव-भाव के साथ भतरी भाषा के छोटे गीत या कविताओं से करते। भतरी गीत सुनते ही बच्चों के चेहरों पर मुस्कान और चमक आ जाती। वे भी शिक्षक के साथ मिलकर गाते। ललिता को भी भतरी गीत/कविताएँ आती थीं, जो वह अलग-अलग त्योहारों में सुनती थी। वह भी धीरे-धीरे गीत गाने लगी। कक्षा में शिक्षक कभी बच्चों को भतरी भाषा में कहानी सुनाते। कहानियाँ बच्चों के अनुभवों से जुड़ी होतीं। सभी बच्चे उनमें डूब जाते, शिक्षक से कहानी पर बातें करते, अपने अनुभव साझा करते। ललिता भी धीरे-धीरे बोलने लगी। उसे कक्षा का माहौल अच्छा लगने लगा। उसे महसूस हुआ कि यह वातावरण घर जैसा है। वह भतरी में अपने दोस्तों से बातें करने लगी। शिक्षक कुछ काम बताते तो वह करने का प्रयास करती और उन्हें दिखाती। पहले उसे इस काम के लिए डर लगता था, लेकिन अब नहीं। शिक्षक भी ललिता में हो रहे बदलाव को महसूस करने लगे। कभी-कभी वे उसके काम को सबसे सामने दिखाते और सभी बच्चों से ताली बजवाते। यह सब ललिता को बहुत अच्छा लगता।

धीरे-धीरे ललिता खुलने लगी। वह कक्षा के सभी कामों में भाग लेने लगी। अब उसका मन स्कूल में लगने लगा। उसे सबसे अधिक बड़ी किताब (बिग बुक) के चित्र देखना अच्छा लगता था। चित्रों को देखकर वह अपनी खुद की कहानियाँ बनाने लगी। चित्रों के नीचे लिखे वाक्यों को पढ़ने का प्रयास करने लगी। वह अब खुश रहती और हमेशा स्कूल आने के लिए तैयार रहती। उसके मन से स्कूल का डर हट गया था। शिक्षक भी उससे खुश रहने लगे। वह कक्षा के सभी काम समय पर करने लगी और स्कूल से घर आकर अपने परिवार से स्कूल की ढेर सारी बातें साझा करती।

साथियों, ललिता जैसे बहुत से बच्चे हमारी शिक्षा व्यवस्था में हैं, जिनकी कहानियाँ सामने नहीं आ पातीं। बकावंड में ब्लॉक अकादमिक समन्वयक के पद पर कार्यरत श्री सुदरू भारती ने ललिता में आए इस परिवर्तन को नोटिस किया और इस कहानी को लिखा। यह कहानी बताती है कि प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों की अपनी भाषा के प्रयोग मात्र से ही कक्षा के माहौल और बच्चों में कितना सकारात्मक परिवर्तन आता है।
शिक्षकों द्वारा किया गया एक छोटा सा प्रयास भी बड़े बदलाव की शुरुआत हो सकता है।

लेखक परिचय:

सुदरू राम भारती एक अनुभवी शिक्षा विशेषज्ञ हैं और वर्तमान में लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन में ब्लॉक अकादमिक समन्वयक के पद पर कार्यरत हैं। वे पिछले तीन वर्षों से जिला बस्तर के विकासखंड बकावंड में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। उनकी भूमिका में 86 प्राथमिक शालाओं के साथ कार्य करना शामिल है, जहाँ वे बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत कक्षा 1 से 3 तक के शिक्षकों को कक्षा अध्यापन में सहयोग प्रदान करते हैं। वे कविता, कहानी, चित्र चार्ट और बिग बुक जैसे संसाधनों के उपयोग से शिक्षकों को कक्षा संचालन में सहायता करते हैं तथा शिक्षक संदर्शिका के अनुसार कक्षा संचालन में भी मदद करते हैं। सुदरू राम भारती का विशेष योगदान शिक्षकों को कक्षा अध्यापन में सहयोग देने और छात्रों को प्रभावी व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने में है।